B.Ed. 2nd Year **Dr. Amod Kumar Sinha**
Session – 2018-2020 (Assistant Professor)
Subject – Pedagogy of History **Department of Education**
Course – 7 (B) /Unit – 2(d) **A.N.D.College,**
Topic – राजस्थान के वर्तमान इतिहास–पाठ्यक्रम की आलोचनात्मक समीक्षा Shahpur Patory
Critical Appraisal of Existing History-Curriculum in Rajasthan Samastipur
Lecture No. - 50

राजस्थान में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा माध्यमिक कक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाता है। इस बोर्ड के इतिहास पाठ्यक्रम में कुछ कमियाँ महसूस की गई हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार है -

1. **स्थानीय एवं प्रांतीय इतिहास की कमी** - राजस्थान की माध्यमिक कक्षाओं के इतिहास-पाठ्यक्रम में स्थानीय व प्रांतीय इतिहास का अभाव देखने को मिलता है। पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय इतिहास के साथ-साथ स्थानीय एवं प्रांतीय इतिहास की घटनाओं को शामिल किया जाना चाहिए। साथ ही पाठ्यक्रम में शामिल प्रांतीय घटनाओं का राष्ट्रीय घटनाओं से संबंध भी स्पष्ट किया जाना चाहिए।

2. **दक्षिण-भारतीय इतिहास की कमी** - राज्य बोर्ड द्वारा निर्धारित इतिहास के पाठ्यक्रम में दक्षिण भारतीय इतिहास के विवरण की कमी है। यदि पाठ्यक्रम में शामिल उत्तर भारतीय इतिहास के साथ दक्षिण भारतीय इतिहास को शामिल किया जाए तो छात्रों को संपूर्ण देश के गौरव एवं इतिहास की जानकारी मिल सकती है। इससे क्षेत्रवाद की घटनाओं में कमी आ सकती है।

3. **उद्देश्यपूर्ण शिक्षण की कमी** - पाठ्यक्रम में शैक्षिक उद्देश्यों की कमी साफ झलकती है। अतः पाठ्यक्रम को उद्देश्यपूर्ण बनाने हेतु इसमें शैक्षिक उद्देश्यों को वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में निर्धारित किय जाने की आवश्यकता है।

4. **स्वतंत्रता में योगदान पर मौन** – यह पाठ्यक्रम स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान के योगदान पर मौन है। यदि स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय नेताओं के साथ-साथ

प्रांतीय नेताओं के योगदान के विवरण को सम्मिलित किया जाता तो बेहतर होता।

5. **समन्वय का अभाव** – मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बालकों द्वारा विकास एवं ज्ञान को सहज व स्थायित्व रूप में प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम में पर्याप्त समन्वय हो। समन्वित ज्ञान के अभाव में बालक किसी भी तथ्य के विभिन्न आवश्यक पहलुओं को समझने, स्पष्ट करने, सृजन करने या समस्या के समाधान में स्वयं को अक्षम पाते हैं। किन्तु राजस्थान बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में सम्मिलित सामाजिक विषयों जैसे - इतिहास, भूगोल, नागरिक-शास्त्र, एवं अर्थशास्त्र के बीच समन्वय का अभाव स्वतः परिलक्षित होता है।

6. **व्यापक दृष्टिकोण में असफल** – वसूधैव-कुटुम्बकम् अर्थात्त अंतरराष्ट्रीय सद्भावना के उद्देश्य के लिए यह आवश्यक है कि बालकों में व्यापक दृष्टिकोण का विकास हो। दूसरे शब्दों में वे संकीर्णता की भावना से उपर उठकर विश्व-प्रेम एवं विश्व-बन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत हो जाएँ। वर्तमान युग में हम जाति, क्षेत्र, वर्ण, राज्य, देश, भाषा, हम बँटे हुए है। थोड़ी सी शक्ति, ज्ञान, या धन के आते ही हम ऊँच-नीच, जात-पात,अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित आदि का भेद करना शुरू कर देते हैं। क्षमा, प्रशंसा, और सहयोग की जगह प्रतिशोध, ईर्ष्या और असहयोग आधुनिक युग का संस्कार बन गया है। बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम शांति व सद्भाव के प्रयास में मौन है।

7. **अधिक एवं अनावश्यक पाठ्यवस्तु** - किसी भी पाठ्यक्रम की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उसमें पाठ्यवस्तु का संकलन उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाए। साथ ही इसका निर्माण करते वक्त निर्धारित समय का ध्यान भी रखा जाए। वर्तमान पाठ्यक्रम में अनेकों अरूचिकर , व्यवहारहीन, लक्ष्यहीन, अस्पष्ट पाठ्यवस्तु का संकलन किया गया है। आवश्यकता से अधिक पाठ्वस्तु के होने से विषय-वस्तु का अध्ययन-अध्यापन नीरस हो जाता है। साथ ही छात्रों में रटकर याद करने की प्रवृत्ति बढ़ती है। इससे उनका मानसिक , शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास अवरूद्ध होता है।

To be continued...